CHETANA
INTERNATIONAL JOURNAL OF EDUCATION (CIJE)
Peer Reviewed/Refereed Journal
(ISSN: 2455-8729 (E) / 2231-3613 (P))
Impact Factor
SJIF 2023 - 7.286

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

हमारी राष्ट्रीय अस्मिता और भविष्य का नारी साहित्य

डॉ. सिद्धि जोशी
सह-आचार्य
राजकीय कन्या महाविद्यालय झुंझुनू
Email ID: dr.joshisiddhi50@gmail.com, *Mob.*- 9928107420

First draft received: 17.03.2024, Reviewed: 25.03.2024, Final proof received: 27.03.2024, Accepted: 31.03.2024

सार संक्षेप

वैदिक काल से आज तक साहित्य की सभी विद्याओं में महिलाओं ने पुरूषों के समान अपनी सर्जनात्मक शक्ति का परिचय दिया है। विश्व इतिहास साक्षी है कि इस पुरूष समाज में नारी प्राचीन काल से ही सामाजिक, नैतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक एवं राजनीतिक जालों से जकड़ी हुई है। सामाजिक खौफ से गुजरते हुए स्त्री खुद से डरी, खुद में विभाजित और शक्तिहीन हो जाती है। भारतीय संदर्भ में हम देखते हैं कि समाज का बंटवारा स्त्री–पुरूषों के बीच में ही नहीं बल्कि अनेक जगह, अनेक स्तरों में बंटी हुई स्त्रियों के बीच है। नारी – चेतना की पैरवी रचनात्मक संसार में तब तक अर्थहीन होगी जब तक देश की आधी आबादी की शेष पैंतालीस प्रतिशत उत्पीड़ित स्त्रियों की त्रासदी चाहे वे सवर्ण–अवर्ण किसी भी वर्ग समुदाय से आती हो उनकी मूलभूत समस्याएं उकेरी नहीं जायेगी। भारतीय समाज व्यवस्था में स्त्रियों के लिए अधिक अवसर प्राप्त करने की गुंजाइश नहीं है।

मुख्य शब्द : *वैदिक काल, सर्जनात्मक शक्ति आदि.*

प्रस्तावना

नारी का सम्मान करना भारतीय संस्कृति का महत्वपूर्ण जीवन मूल्य रहा है। बाबा तुलसी ने नारी स्तुति को महत्त्व दिया है। उन्होंने पहले सीता का अभिवादन फिर राम का अभिवादन, पहले भवानी की स्तुति फिर शिव की स्तुति की है। मनु महाराज ने तो यहां तक कहा है :

यत्र नार्यस्तु पूज्यते रमन्ते तत्र देवता :।

यत्रातास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रिया।।

जहां स्त्रियों की पूजा होती है, वहां देवता रमण करते हैं, जहां इनकी पूजा नहीं होती है, वहां सारी क्रियाएं निष्फल हो जाती है। पुराणों में भी नारी को गृहस्थ आश्रम का मूल माना है, परिवार की धुरी नारी है। सृष्टि के आदि में रूद्र आधे शरीर से पुरूष और आधे से स्त्री हुए तब ब्रह्म ने इनके दो विभाग कर के सृष्टि बना दी, इस प्रकार नर–नारी का मूलाधार है। भारतीय स्त्री की कहानी उत्थान एवं पतन की कहानी है। समय के दर्पण में भारतीय नारी का प्रतिबिम्ब उत्थान, पतन एवं उत्थान की कहानी को कहता है। भारत में प्रागैतिहासिक युग की नारी ने अपने जीवन की यात्रा स्वतंत्र रूप में की थी वैदिक युग की नारी अपनी पूर्ण गरिमा के साथ उपस्थित होती है।

रामायण' में जहां सीता को पति के साथ स्वतन्त्र वन में विचरने की छूट थी, वहीं पर श्री राम द्वारा सीता का त्याग तथा 'महाभारत' में द्रोपदी को जुए में लगाना नारी के सम्मान के पतन की कहानी कहता है।

स्मृति काल में स्त्रियों की स्थिति में और भी गिरावट आयी। 'भक्तिकाल' में भक्तों ने नारी की समानता के प्रयास किये है। सूर की गोपियों का अपना सामाजिक महत्त्व है। मीरा ने सामन्ती परिवार में जन्म लेने के बावजूद भी नारी को दासी समझी जाने वाली संस्कृतियों को चुनौती दी है। स्त्री ने स्वतन्त्र व्यक्तित्व के रूप में अपनी यात्रा आरम्भ की थी, किन्तु धीरे–धीरे समाज ने उसे व्यक्ति से वस्तु बना डाला और वह पुरूष सता की पराधीनता के मकड़जाल में फंसकर यह विस्तृत कर बैठी कि उसकी भी अपनी निजी अस्मिता है।

पुरूष ने स्त्री की जिस एक चीज को मारा, कुचला या पालतू बनाया है, वह है उसकी स्वतंत्रता। अपनी अखण्डता और सम्पूर्णता में नारी दुर्जेय और अजेय है। पुरूष ने हर सम्भव यह कोशिश की है कि उसे परतंत्र और निष्क्रिय बनाया जा सके। इसीलिए सिमोन बोउवा कहती है – 'औरत पैदा नहीं होती, बनाई जाती है।''

वैदिक काल से आज तक साहित्य की सभी विद्याओं में महिलाओं ने पुरूषों के समान अपनी सर्जनात्मक शक्ति का परिचय दिया है। विश्व इतिहास साक्षी है कि इस पुरूष समाज में नारी प्राचीन काल से ही सामाजिक, नैतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक एवं राजनीतिक जालों से जकड़ी हुई है। सामाजिक खौफ से गुजरते हुए स्त्री खुद से डरी, खुद में विभाजित और शक्तिहीन हो जाती है। भारतीय संदर्भ में हम देखते हैं कि समाज का बंटवारा स्त्री–पुरूषों के बीच में ही नहीं बल्कि अनेक जगह, अनेक स्तरों में बंटी हुई स्त्रियों के बीच है। नारी – चेतना की पैरवी रचनात्मक संसार में तब तक अर्थहीन होगी जब तक देश की आधी आबादी की शेष पैंतालीस प्रतिशत उत्पीड़ित स्त्रियों की त्रासदी चाहे वे सवर्ण–अवर्ण किसी भी वर्ग समुदाय से आती हो उनकी मूलभूत समस्याएं उकेरी नहीं जायेगी। भारतीय समाज व्यवस्था में स्त्रियों के लिए अधिक अवसर प्राप्त करने की गुंजाइश नहीं है।

संयुक्त परिवार का गठन ही कुछ इस प्रकार से हुआ है कि स्त्री के लिए रोशनी के सारे दरवाजे बंद है। व्यवहार में प्रायः वह उपेक्षित ही रही है। एक ओर पतिव्रत की अधिसार पर चलने और दूसरी तरफ वात्सल्य की प्रतिमूर्ति बनने में ही उसके जीवन की महत्ता मानी जाती है। उसकी कोई स्वतंत्र पहचान नहीं। आज नारी ने अपने स्वतंत्र अस्तित्व एवं अस्मिता की रक्षा हेतु बिगुल बजा दिया है। वह अपनी परवशता के प्रति जागृत हो गई। उसने अपनी आन्तरिक शक्ति को पहचाना, अपने उपेक्षित जीवन से मुक्ति पाने के लिए अपने दलित रूप को उतार फैंका है। स्वामी विवेकानन्द ने नारी स्वतंत्रता और स्त्री शिक्षा का समर्थन किया था : ''संसार की सभी जातियां नारियों का समुचित सम्मान करके ही महान हुई हैं जो जाति नारी का सम्मान करना नहीं जानती, वह ने तो अतीत में उन्नति कर सकीं और न आगे उन्नति कर सकेंगी।

जिस स्त्री ने घर की देहली भी नहीं लांघी थी, वही स्त्री महात्मा गांधी जी की प्रेरणा से राष्ट्रीय आन्दोलन में उत्साह से कूद पड़ी। हाथ में आजादी को प्राप्त करने के लिए तिरंगा झंडा लेकर नारियों क्रान्ति के गीत गाती हुई सड़कों पर उतरी।

गांधी जी से प्रभावित होकर राजनीतिक रंगमंच पर सरोजिनी नायडू, अरूणा आसफ अली, विजयलक्ष्मी पंडित, सुचित्रा कृपलानी, इन्दिरा गांधी आदि नारियों राजनीतिक कार्य सफलता के साथ करती हुई दिखाई दी। उन्होंने राष्ट्रीय अस्मिता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। किरन बेदी, बचेन्दरी पाल, पी.टी.उषा जैसी नारियों ने अलग–अलग क्षेत्रों में अपनी पहचान बनाई है। आज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नारी के दर्शन हो रहे है। उषा प्रियवंदा, ऋता शुक्ला, श्रीमती कमल कुमार, अंसल, कुसुम, कृष्णा अग्निहोत्री, कृष्णा सोबती, चित्रा मुद्गल, दिप्ति खण्डेलवाल, नमिता सिंह, नासिरा शर्मा, पद्मा सचदेवा, प्रभा खेतान, मन्नु भंडारी, मंजुल भगत, मणिका मोहिनी, मालती जोशी, मेहरून्निसा, परवेज, मैत्रेयी, पुष्पा, मृदुला गर्ग, मृणाल पाण्डेय, राजी सेठ, शिवानी, शशी प्रभा शास्त्री, सूर्यबाला जैसी विदुषी नारियां समाज निर्माण के कार्य में जुड़ी हुई हैं। भारतवर्ष में स्त्री संदर्भित समस्याओं जैसे अंधविश्वास, तलाक, विधवा विवाह, कुरीतियों और महत्वपूर्ण कानूनों की भूमिकाओं को लेकर लेखिकाओं ने गहन चिंतन किया है। आज स्त्री सदियों के बाद एक भरपूर खुली सांस ले पाने में समर्थ है। परम्परागत समाज की नींव अगर स्त्री की शर्मिंदगी पर टिकी थी तो वह हिल उठी है।

यदि आर्थिक आत्मनिर्भरता ही स्वाधीनता की कुंजी है तो जब तक स्त्री के पास देह है और संसार के पास पुरूष, तब तक स्त्री को चिन्ता की क्या जरूरत है तो देह को पुरूष के स्वामित्व से मुक्त कर के अपने अधिकार में लेने की, क्योंकि यौन शुचिता, पातिव्रत, सतीत्व जैसे मूल्य स्त्री के सम्मान का नहीं, पुरुष के अहंकार का, दीनता और असुरक्षा का पैमाना तथा पितृ सत्ता के मूल्य है और स्त्री की बेड़ियां हैं। जिसने ये बेड़ियाँ उतार दी है वह स्त्री विशिष्ट है।''

आज नारी अपने अस्तित्व की सुरक्षा के लिए परम्परागत मूल्यों से लड़ रही है। इन लेखिकाओं की नारियां आंचल में दूध और आंखों में पानी लेकर नहीं बढ़ती, इनके साहित्य की नारी अंगारों के बीच दहकती है।

लेखिकाओं ने 'स्त्री' को केन्द्र में रखकर अनेक समस्याएं प्रस्तुत की हैं। महिलायें धीरे–धीरे यह महसूस करने लगी कि इंसान रूप में उनका भी एक निजी व्यक्तित्व है। नासिरा शर्मा का चर्चित उपन्यास 'ठीकरे की मंगनी' की नायिका महरूरवा आर्थिक रूप से स्वावलम्बी नारी है। संघर्षों और तजुर्बों की सुरंग से निकलकर अपने अस्तित्व को उसने सुरक्षित रखा है। महरूरवा का निजी घर था, इसलिए जब सेवा से मुक्त हो जाने के बाद उस अपने घर की आवश्यकता भी होती है। 'एक घर औरत का अपना भी हो सकता है, जो उसके बाप और शौहर के घर से अलग, उसकी मेहनत और पहचान का हो.... मेरा अपना घर वही पुराना है जहां मैं पिछले तीस वर्षों से रह रही हूं।

कृष्णा अग्निहोत्री के 'टपरेवाली' की नायिका लीला विवेकशील एवं जागरूक है। लीला के जीवन को देखकर लेखिका कहती है – 'तब भी आने वाला कल उनकी आवाज के दर्द को समझेगा। जाति–पांति, ऊँच–नीच के भेद के परे एक सुखी सम्पन्न समाज के बीच उनका भी स्थान होगा। उन्हीं में से कोई लीला जैसी विवेकी होकर समय की लड़ाई में अपने लिए स्थान बना सकेगी और तब टूट सकेगा वह धुंधलका जो उन्हें ढांक रहा है। मैत्रेयी पुष्पा का 'चाक' स्त्री की स्वतंत्रता स्थापित करने का महत्वपूर्ण प्रयास है।

वह पुरूष समाज में स्त्री अपनी पहचान का संकल्प–पत्र है। मैत्रेयी पुष्पा ने सांरग के हक में फैसला किया है। कुसुम अंसल की 'एक ओर पंचवटी' की नायिका साध्वी छटपटाती है जब उसके पति के हाथों उसका व्यक्तित्व रौंदा जाता है। वह नैतिक मान्यताओं, सामाजिक सीमाओं का उल्लंघन कर व्यक्ति स्वातंत्रय के मूल्य की प्रतिष्ठा करती है। वह अपनी प्रतिभाओं का अवमूल्यन होते नहीं देख सकती। डॉ. शशि प्रभा शास्त्री का मानना है – 'शिक्षित होने के कारण उनकी अपनी व्यक्गित मांगे हैं – वह अपने व्यक्तित्व को पति के साथ विलीन नहीं कर सकती, यह विलीन करना उसकी प्रकृति के अनुकूल नहीं है। वह अपने व्यक्तित्व को अलग से रखना चाहती है।''

लेखिकाओं ने राष्ट्रीय अस्मिता को बनाया है। मध्यकालीन मिथकों को तोड़ा है। जैविकीय भिन्नता के बावजूद नारी कहीं पर भी पुरूषों से कमजोर नहीं है। जब नारी अपने कामिनी भाव का त्याग करेगी, स्त्री पुरूष में सहज मैत्री भाव रहेगा, अधिकारों के साथ कर्त्तव्य पालन करने की दृढ़ इच्छा शक्ति होगी तो उत्पीड़न से नारी मुक्ति पा लेगी।

भविष्य के नारी–लेखन के लिए अनेक चुनौतियां है। महादेवी वर्मा जो कि महिला लेखन के लिए मील का पत्थर है, वे विवेचना की है – भारतीय नारी भी जिस दिन अपने सम्पूर्ण प्राण–वेग से जाग सके, उस दिन उसकी गति रोकना किसी कि लिए संभव नहीं। उसके अधिकार न भिक्षावृत्ति से मिले हैं न मिलेंगे, क्योंकि वे उसकी आदान–प्रदान योग्य वस्तुओं से भिन्न है। समस्या का समाधान समस्या के ज्ञान पर निर्भर है। आज नारी का अपना वजूद है, मंजिलें हैं, उपलब्धियां है, मजबूरियां है। सरकार ने भी कानून बनाकर इस दिशा में महत्वपूर्ण योगदान किया है। इससे स्त्रियों की भावी प्रगति के मार्ग खुल गये है। प्रगतिशील महिलाओं ने रूढ़िवाद के गढ़ को ध्वस्त किया। आज ऐसे सैकड़ों उपन्यास, कहानियां गिनाई जा सकती है, जिनकी विषयवस्तु स्त्री–लेखन में लगातार आ रहे अनुभव वैविध्य की ओर संकेत करती है।

जब तक नारी पर होने वाले अत्याचार शोषण, बलात्कार आदि की खबरें समाचार पत्रों में छपती रहेगी, नारी को पूर्ण उन्मुक्त होने का अवसर कम ही मिलेगा। नारी को मुक्त कराने का प्रयास ही नारी मुक्ति आंदोलन का उद्देश्य है। मात्र पुरूष सत्ता से बराबरी करके उनके समान रहने, पुरूषों के बन्धन अस्वीकार करने से नारी मुक्ति आंदोलन संभव नहीं है। सिमोन बोऊवा का मानना है कि स्त्री और पुरूष के बीच कुछ मौलिक अंतर तो रहेंगे ही उसकी संवेदनशीलता की दुनियां अलग है, यह तो पुरुष को स्थापित करना है कि दी हुई दुनियां में स्वाधीनता का आधिपत्य रहे। कालजयी रचनाकार जयशंकर प्रसाद का मानना है कि नर–नारी के संबंधों के भावनात्मक तन्तु सौहार्द्र और सामंजस्य पर टिके हुए हैं :–

मनु तुम श्रद्धा को गये भूल।
उस पूर्ण आत्मविश्वासमयी को उडा दिया था समझ तूल
तुम भूल गए पुरूषत्व मोह में, कुछ सत्ता है नारी की।
समरसता है सम्बन्ध बनी, अधिकार और अधिकारी की।

सर्वोच्च विजय के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि स्त्री और पुरूष अपने प्राकृतिक विभाजन को बनाये रखते हुए भी आपसी सौहाद्र स्थापित करें, भविष्य का नारी साहित्य निश्चित ही उज्ज्वल होगा ऐसी आशा की जा सकती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

(1) हंस, फरवरी 2000, वत्यव्य राजेन्द्र यादव
(2) ठीकरे की भंगनी, नासिरा शर्मा
(3) टपरेवाली, कृष्णा अग्निहोत्री
(4) श्रृंखला की कड़ियां, महादेवी वर्मा, भूमिका से
(5) कामायनी, जयशंकर प्रसाद